8 विविधा

प्रस्तुत पाठ्य-पुस्तक को अध्ययन-अध्यापन की दृष्टि से दो खण्डों में विभक्त किया गया है—प्रथम खण्ड और द्वितीय खण्ड। प्रथम खण्ड में 'विविधा' के अन्तर्गत सेनापति, देव एवं घनानन्द को चुना गया है। इस संग्रह में अनेक प्रतिष्ठित कवियों को स्थान देने पर भी मध्यकालीन काव्य का सम्यक् परिचय एवं पर्याप्त रसास्वाद कुछ कवियों की कविताओं के अभाव में अधूरा-सा लगा। पर ऐसे सभी महान् कवियों को स्थान देना सम्भव नहीं था, अतः उक्त कवियों का चुनाव उनकी काव्य-प्रतिभा की गरिमा के आधार पर किया गया है। इनके काव्य का रसास्वादन करने के लिए इनकी काव्य की प्रमुख विशेषताओं से अवगत कराना आवश्यक एवं उपयोगी है। इसी दृष्टि से इन कवियों की काव्यगत विशेषताओं का विहंगावलोकन किया गया है।

सेनापति (जन्म 1589 ई0)

हिन्दी साहित्य में सेनापति की प्रसिद्धि उनके प्रकृति-वर्णन एवं श्लेष के उत्कृष्ट प्रयोग के कारण है। हिन्दी के किसी भी शृंगारी अथवा भक्तकवि में सेनापति जैसा प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण नहीं मिलता। इन्होंने सभी ऋतुओं के बहुत ही विशद एवं सजीव चित्र उपस्थित किये हैं। पर उसमें प्रकृति के आलम्बन रूप की अपेक्षा उसके उद्दीपन रूप की ही प्रधानता है। सेनापति ने प्रकृति को एक शहरी एवं दरबारी व्यक्ति की दृष्टि से देखा है, अतः इन्हें भोग और विलास की सामग्री ही अधिक प्रतीत हुई। सेनापति की कविता मर्मस्पर्शी है। इसमें भावुकता एवं चमत्कार का बहुत सुन्दर मिश्रण है। श्लेष के तो वे अनुपम कवि हैं। इसके अतिरिक्त अनुप्रास, यमक आदि का भी इनकी कविता में प्रचुर प्रयोग है। सेनापति की भाषा अत्यन्त मधुर एवं चमत्कारपूर्ण है। इनकी रामभक्ति की कविताएँ भी अपूर्व एवं हृदयस्पर्शी हैं।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **नाम**—सेनापति।
- **जन्म**—1589 ई०।
- **जन्म-स्थान**—बुलन्दशहर (उ०प्र०)।
- **पिता का नाम**—गंगाधर दीक्षित।
- **कृतियाँ**—कवित्त रत्नाकर एवं काव्य कल्पद्रुम।
- **मृत्यु**—मृत्यु के सम्बन्ध में कोई निश्चित प्रमाणिक तिथि उपलब्ध नहीं है।

सेनापति की रचना '**कवित्त रत्नाकर**' के आधार पर उनकी गणना रीतिकाल के श्रेष्ठ कवियों में की जाती है। सेनापति ने प्रकृति को एक शहरी एवं दरबारी भक्ति की दृष्टि से देखा है। इन्होंने नायिका के नख-शिख-सौन्दर्य का सजीव चित्रण किया है। इनके काव्य में उद्दीपन-भाव एवं वयःसन्धि आदि का मनोहारी चित्रण भी दर्शनीय है। अलंकार-विधान, प्रकृति-चित्रण एवं छन्द-विधान की दृष्टि से 'सेनापति' को 'केशवदास' के समकक्ष स्थान प्राप्त है।

देव (जन्म 1673 ई0, मृत्यु सन् 1767 ई0)

इनका जन्म उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में संवत् 1730 वि॰ (सन् 1673 ई॰) में हुआ था। इनके पिता का नाम बिहारीलाल दूबे था। इनकी मृत्यु अनुमानतः संवत् 1824 वि॰ (सन् 1767 ई॰) के आस-पास हुई थी। कवि देव द्वारा रचित विपुल साहित्य का उल्लेख मिलता है। विभिन्न ग्रंथों में उल्लिखित तथ्यों के अनुसार इन्होंने लगभग 62 ग्रंथों की रचना की, लेकिन इनमें से अब तक मात्र 15 ग्रंथ ही उपलब्ध हुए हैं जिनका विवरण इस प्रकार है–'भाव-विलास', 'अष्टयाम', 'भवानी-विलास', 'प्रेम-तरंग', 'कुशल-विलास', 'जाति-विलास', 'देवचरित्र', 'रस विलास', 'प्रेम चन्द्रिका', 'सुजान-विनोद', 'शब्द-रसायन', 'सुखसागर तरंग', 'राग-रत्नाकर', 'देवशतक' तथा 'देवमाया-प्रपंच' आदि।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **नाम**—देवदत्त (देव)।
- **जन्म**—1673 ई॰।
- **जन्म-स्थान**—इटावा (उ॰ प्र॰)
- **कृतियाँ**—भाव-विलास, अष्टयाम, भवानी-विलास, प्रेम-चन्द्रिका, शब्द-रसायन, प्रेम-तरंग आदि।
- **मृत्यु**—1767 ई॰।

देव प्रमुख रूप से दरबारी कवि थे। रीतिकालीन प्रवृत्ति के अनुसार देव ने भी काव्य-रीति के निरूपण को प्रमुखता दी है। कवित्वमयता, भावानुभूति एवं रसानुभूति की दृष्टि से देव की रचनाएँ आकर्षक और प्रभावशाली हैं। रीतिकाल के अनेक कवियों की भांति देव में आचार्य और कवि का मिश्रण है। देव के समान भाव-सौष्ठव तथा उनके समान सूक्ष्म कल्पना रीतिकाल के बहुत कम कवियों में मिलती है। देव ने अपनी रचनाएँ ब्रज-भाषा में की हैं, जिसमें संस्कृत का पुट भी मिलता है। देव का शब्द भण्डार भी अन्य कवियों की तुलना में अधिक समृद्ध है। देव रीतिकाल के सर्वाधिक सृजन करने वाले कवि हैं। देव विरह की चरम अवस्था का सम्यक् वर्णन करने में निपुण थे।

रीतिकाल के अनेक कवियों की तरह देव में आचार्य और कवि का मिश्रण है। देव में कवित्व की नैसर्गिक प्रतिभा है तथा इनका काव्य-क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। पर मूलतः वे गार्हस्थ प्रेम के अत्यन्त सरस और उत्कृष्ट कवि हैं। इनका सौन्दर्य-चित्रण हृदयस्पर्शी है। कहीं-कहीं भाव की अत्यन्त उच्च कल्पना है, पर अनुप्रास, अक्षर-मैत्री आदि के मोह के कारण उस उच्च भावभूमि पर टिक नहीं पाये हैं। पर देव का-सा भाव-सौष्ठव तथा उनकी सी सूक्ष्म कल्पना रीतिकाल के बहुत कम कवियों में मिलती है। इनका **'शब्द रसायन'** 'काव्य प्रकाश' पर आधारित ग्रन्थ है। देव रीतिकाल के सबसे अधिक सृजन करनेवाले कवि हैं।

घनानन्द (जन्म 1689 ई0, मृत्यु सन् 1739 ई0)

घनानन्द का जन्म संवत् 1746 वि॰ (सन् 1689 ई॰) में माना जाता है क्योंकि इनके जीवन से सम्बन्धित प्रामाणिक तथ्य अभी तक उपलब्ध नहीं हो सके हैं। किंवदन्तियों के अनुसार घनानन्द मुहम्मदशाह रंगीले के दरबारी कवि थे। किन्तु दरबारी षडयन्त्रों से खिन्न होकर इन्होंने दरबार छोड़ दिया और वृन्दावन में रहने लगे। इन्होंने कृष्ण भक्ति पर आधारित काव्य की रचना की। घनानन्द की प्रमुख काव्य कृतियों में 'सुजानमति', 'वियोग-बेलि', 'प्रीति-पावस', 'प्रेम-सरोवर' तथा 'प्रेम-पहेली' आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

शुक्ल जी घनानन्द को साक्षात् रसमूर्ति कहते हैं। इन्हें रीति-मुक्त धारा का सर्वश्रेष्ठ कवि कहा जा सकता है।

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **नाम**—घनानन्द।
- **जन्म**—1689 ई॰।
- **जन्म-स्थान**—बुलन्दशहर (उ॰प्र॰)।
- **कृतियाँ**—सुजानमति, वियोग-बेलि, प्रीति-पावस, प्रेम-सरोवर, प्रेम-पहेली इत्यादि।
- **उपलब्धियाँ**—रीतिमुक्त धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि, विरह वर्णन की उत्कृष्ट रचनाएँ करने के कारण प्रेम के पीर के कवि कहलाए।
- **मृत्यु**—1739 ई॰।

अन्य रीतिकाल कवियों की तरह इनका काव्य-विषय कल्पना-प्रसूत नहीं है। इनकी कविता का प्रमुख विषय वियोग शृंगार है और उसकी पीर इन्हें जीवन से प्राप्त हुई है। माना जाता है कि 'सुजान' नामक किसी रमणी से इनका प्रेम था और वह इनके प्रेम के अनुरूप प्रतिदान नहीं दे सकी, अतः ये उसे 'बिसासी' कह कर पुकारते हैं। 'सुजान' शब्द कृष्ण और प्रेयसी दोनों का बोधक है, अतः इनकी कविता में प्रेम और भक्ति का मिश्रण है, पर लौकिक प्रेम के स्वर ही अधिक मुखर हैं। इनकी कविता में भी प्रेम की बाह्य चेष्टाओं का ही अधिक वर्णन है, पर हृदय का स्पर्श करनेवाली गहरी अन्तर्वृत्तियों के मर्मस्पर्शी चित्र भी पर्याप्त हैं। इन्होंने विरह की आभ्यन्तर अनुभूति का बहुत ही हृदय-द्रावक चित्रण किया है।

घनानन्द का भाषा पर पूर्ण अधिकार है। वे भाषा को बुद्धि से नहीं, हृदय से ग्रहण करते हैं। इन्होंने शब्दों के भावों का हृदय से साक्षात्कार किया है। यही कारण है कि ऊपर से आरोपित बोझिल अलंकारों की अपेक्षा घनानन्द ने भाव की रमणीयता को सम्प्रेषित करने में समर्थ लाक्षणिकता एवं ध्वन्यात्मकता का प्रयोग किया है। इनका उक्ति-वैचित्र्य और वचन-वक्रता छायावादी कवियों के टक्कर के हैं। घनानन्द की कविता में विशेषण-विपर्यय और विरोधमूलक चमत्कार के बहुत ही सुन्दर उदाहरण मिलते हैं। घनानन्द की भाषा में वक्रोक्ति के साथ भाषा के स्निग्ध प्रवाह एवं भाव-व्यंजन-क्षमता का भी अपूर्व मिश्रण है।

●●

सेनापति

[निम्न काव्य-पंक्तियों में सेनापति ने प्रकृति का चित्रण किया है। प्रकृति-चित्रण की दृष्टि से सेनापति अद्वितीय प्रतिभा के धनी थे। शृंगारी कवियों में इनके जैसा ऋतु-वर्णन और किसी कवि ने नहीं किया है।]

बृष कौं तरनि, तेज सहसौ किरन करि
ज्वालन के जाल बिकराल बरसत है।
तचति धरनि जग जरत झरनि सीरी
छाँह कौं पकरि पंथी-पंछी विरमत है।
'सेनापति' नैक दुपहरी के ढरत होत,
धमका विषम ज्यौं न पात खरकत है।
मेरे जान पौनौं सीरी ठौर कौं पकरि कौनौं
घरी एक बैठि कहूँ घामै वितवत है।।1।।

सिसिर मैं ससि कौं सरूप पावै सविताऊ,
घामहूँ मैं चाँदिनी की दुति दमकति है।
'सेनापति' होत सीतलता है सहस गुनी,
रजनी की झाँई बासर मैं झमकति है।
चाहत चकोर सूर ओर दृग छोर करि,
चकवा की छाती तजि धीर धसकति है।
चंद के भरम होत मोद है कमोदनी कौं,
ससि संक पंकजिनी फूलि न सकति है।।2।।

देव

[देव रसवादी आचार्य थे और रस को आनन्दमयी अनुभूति मानते थे। देव ने अपने काव्य में शृंगार के संयोग और वियोग दोनों ही पक्षों का चित्रण किया है। निम्न पंक्तियों में देव ने बसन्त का वर्णन बालक के रूप में किया है तथा नायिका द्वारा नायक के सौन्दर्य का वर्णन भी कराया है।]

डार द्रुम पलना, बिछौना नवपल्लव, के,
सुमन झंगूला सोहै तन छबि भारी दै।

पवन झुलावै, केकी कीर बहरावै, 'देव',
'कोकिल हलावै, हुलसावै करतारी दै।।
पूरित पराग सौं उतारौ करै राई-लोन,
कंजकली नायिका लतानि सिर सारी दै।।
मदन महीपजू को बालक बसंत, ताहि,
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै।।1।।

झहरि झहरि झीनी बूँद हैं परति मानो,
घहरि घहरि घटा घेरी है गगन में।
आनि कह्यो स्याम मो सौं, चलौ झूलिबे को आज,
फूली न समानी भई ऐसी हौं मगन मैं।
चाहत उठ्योई उठि गई सो निगोड़ी नींद,
सोय गए भाग मेरे जानि वा जगन में।
आँख खोलि देखौं तौं न घन हैं, न घनस्याम,
वेई छाई बूँदें मेरे आँसू ह्वै दृगन में।।2।।

धार मैं धाइ धँसी निरधार ह्वै,
जाइ फँसी उकसीं न उबेरी।
री! अंगराय गिरीं गहिरी, गहि
फेरे फिरीं औ घिरीं नहिं घेरी।
'देव' कछू अपनो बसु ना, रस-
लालच लाल चितै भईं चेरी।
बेगि ही बूड़ि गयीं पँखियाँ,
अँखियाँ मधु की मँखियाँ भईं मेरी।।3।।

घनानन्द

[रीतिमुक्त कवियों में प्रधानता प्राप्त करनेवाले कविवर घनानन्द ने अपने काव्य की रचना प्रेम को आधार बनाकर की। उनका समस्त काव्य 'प्रेम की पीर' का परम रूप है। इन्होंने अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में सुजान नाम की रूपवती वेश्या से प्रेम किया था। इनका यह प्रेम सम एवं विषम दोनों कोटियों का था। प्रेम के मार्ग में तनिक भी सयानेपन और कुटिलता को इन्होंने श्रेयस्कर नहीं समझा। इनका मानना था कि प्रेम के ऐसे मार्ग पर अहंभाव को त्याग कर सच्चे लोग ही चल सकते हैं।]

अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचें चलैं तजि आपुनपौ झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।

'घनआनँद' प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक से दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ कहौ मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।1।।

डगमगी डगरि धरनि छबि ही के भार,
ढरनि छबीले उर आछी बनमाल की।
सुन्दर बदन तर कोटिक मदन वारौं,
चित चुभी चितवनि लोचन बिसाल की।
काल्हि हि गली अली निकसे औचक आय,
कहा कहौं 'अटक मटक' तिहि काल की।
भिजई हौं रोम रोम आनन्द के घन छाय,
बसी मेरी आँखिन मैं आवनि गुपाल की।।2।।

पर काजहि देह को धारे फिरौ,
परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ।
निधि नीर सुधा के समान करौ,
सबही विधि सज्जनता सरसौ।
'घनआनँद' जीवनदायक हौं,
कछु मेरियौ पीर हिये परसौ।
कबहूँ वा बिसासी सुजान के आँगन,
मो अँसुवान को लै बरसौ।।3।।

अभ्यास प्रश्न

➥ पद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर उनके नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

सेनापति

(क) वृष कौं तरनि, तेज सहसौ किरन करि
ज्वालन के जाल विकराल बरसत है।
तचति धरनि जग जरत झरनि सीरी
छाँह कौं पकरि पंथी-पंछी विरमत है।

'सेनापति' नैक दुपहरी के ढरत होत,
धमका विषम ज्यौं न पात खरकत है।
मेरे जान पौनौं सीरी ठौर कौं पकरि कौनौं
घरी एक बैठि कहूँ घामै वितवत है।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) पद्यानुसार हवा की स्थिति कैसी है?
(iv) भीषण गर्मी के कारण धरती की स्थिति कैसी है?
(v) प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

देव

(ख) शहरि झहरि झीनी बूँद हैं परति मानो,
घहरि घहरि घटा घेरी है गगन में,
आनि कह्यो स्याम मो सौं, चलौ झूलिबे को आज,
फूली न समानी भई ऐसी हौं मगन मैं।
चाहत उठ्योई उठि गई सो निगोड़ी नींद,
सोय गए भाग मेरे जानि वा जगन में।
आँख खोलि देखौं तौं न घन हैं, न घनस्याम,
वेई छाई बूँदैं मेरे आँसू ह्वै दृगन में।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) श्याम ने कब नायिका से झूला झूलने के लिए कहा और उसका क्या प्रभाव हुआ?
(iv) प्रस्तुत पद्यांश में किसकी मनोदशा का वर्णन हुआ है?
(v) प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

घनानन्द

(ग) अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तहाँ साँचें चलैं तजि आपुनपौ झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।
'घनआनँद' प्यारे सुजान सुनौ यहाँ एक से दूसरो आँक नहीं।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ कहौ मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) प्रेम मार्ग की विशेषताएँ बताइए।
(iv) पद्यांश में सुजान शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(v) 'मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

(घ) पर काजहि देह को धारे फिरौ,
परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ।
निधि नीर सुधा के समान करौ,
सबही विधि सज्जनता सरसौ।
'घनआनँद' जीवनदायक हौं,
कछु मेरियौ पीर हिये परसौ।
कबहूँ वा बिसासी सुजान के आँगन,
मो अँसुवान को लै बरसौ।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) कवि किससे प्रार्थना कर रहा है?
(iv) अपना कष्ट दूर करने के लिए कवि बादल को कौन-सा उलाहना देता है?
(v) बादल निधि नीर को सुधा के समान किस प्रकार करता है?

➥ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नांकित काव्य-सूक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—
(क) अति सूधो सनेह को मारग है जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
(ख) निधि नीर सुधा के समान करौ, सबही विधि सज्जनता सरसौ।
(ग) तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ कहौ मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।
2. सेनापति की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
3. सेनापति की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
4. "देव रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं?" इस कथन के औचित्य पर अपने विचार प्रकट कीजिए।
5. उपयुक्त उदाहरणों की सहायता से देव के काव्य-सौष्ठव का विवेचन कीजिए।
6. देव का जीवन-परिचय लिखिए।
7. घनानन्द के विरह-वर्णन की मार्मिकता का निरूपण कीजिए।
8. घनानन्द की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
9. घनानन्द का संक्षिप्त जीवन-परिचय लिखिए।

➥ लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सेनापति के प्रकृति-चित्रण की क्या विशेषताएँ हैं?
2. देव किस काल के कवि माने जाते हैं?
3. घनानन्द के अनुसार प्रेम का मार्ग कैसा है? स्पष्ट कीजिए।
4. घनानन्द की भाषा-शैली बताइए।
5. 'घनानन्द' के वियोग वर्णन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

➥ काव्य-सौन्दर्यात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्ति में काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए–

   वृष कौं तरनि तेज सहसौ किरन करि,
   ज्वालन के ज्वाल विकराल बरसत है।
2. 'सिसिर में ससि कौं सरूप पावै सविताऊ' पंक्ति में अलंकार का नाम तथा उसका लक्षण लिखिए।

●●●